"बच्चों के लिए हिन्दी में कविता-कहानियों से इतर विधाओं में साहित्य बहुत ही कम मात्रा में उपलब्ध होता है। विज्ञान और गणित में पाठ्यपुस्तकों से इतर साहित्य की कल्पना दीगर बात है। बच्चे नीरस तरीके से तैयार पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने के लिए अभिशप्त होते हैं। जबकि पाठ्यपुस्तकेत्तर साहित्य बच्चों की बेहतर सीखने में मदद कर सकता है। 'वृत्तों की दुनिया' पुस्तक का आगमन बच्चों को बोझिल दिखने वाली गणित की दुनिया से बाहर झांकने का अवसर देता है और बच्चों के ध्यान को अपने आसपास के परिवेश में उपलब्ध गणितीय रूपाकारों की ओर बड़ी सुन्दरता से ले जाती है और गणित की दुनिया को एक खूबसूरत दुनिया में तब्दील कर देती है।"

खेल-खेल में : 'वृत्तों की दुनिया'

कमलेश चंद्र जोशी

स्कूलों में गणित को एक कठिन विषय के रूप में जाना जाता है। बच्चों के लिए अर्थपूर्ण बनाने हेतु इसे शुरुआती कक्षाओं में ठोस वस्तुओं से तथा इसके बाद धीरे-धीरे जीवन के अपने अनुभवों से जोड़ने की सलाह दी जाती है ताकि बच्चे गणित का मूर्त रूप से एहसास करके इसकी अवधारणाओं को आम जीवन से जोड़ते हुए समझ सकें और गणित एक बोझिल विषय न बनकर एक रुचिपूर्ण विषय बन सके।

इसी सोच को ध्यान में रखते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली द्वारा हाल ही में ''वृत्तों की दुनिया'' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की गई है। यह पुस्तक बच्चों के आम जीवन से जुड़े अनुभवों के द्वारा वृत्त व इससे जुड़ी अवघारणाओं से संबंधित गतिविधियों को खेल-खेल में करके, उनमें सीखने का उत्साह जगाती है।

किताब की शुरुआत में इसकी मुख्य पात्र सुगंधा सुबह के समय अपने खेत में एक गोलाकार क्यारी बनाना चाहती है। यह काम उसे मुश्किल लगता है। तभी उसकी नजर उगते हुए सूरज पर पड़ती है। वह सोचती है, 'काश! यह मुझे मिल जाता तो मैं इसे खेत में रखकर वृत्त खींच लेती।'

एक बच्ची की इस तरह की कल्पना पुस्तक को जहां 'बालकेंद्रित' बनाने का प्रयास करती है, वहीं पुस्तक को बच्चों के परिवेशीय अनुभवों से भी जोड़ती हैं। इससे लेखक की बच्चों के प्रति एक सकारात्मक सोच का भी पता चलता है।

पुस्तक में ऐसे काफी उदाहरण मिलते हैं, जिनमें बच्चों के कुएं, कोल्हू, कुम्हार के चाक, बस, गेहूं पीसने की हाथ की चक्की, हनुमान जी की पूंछ, चारा काटने की मशीन, लंगड़, ट्रेन, कोड़ा जमाल शाही का खेल आदि के रोजमर्रा के अनुभव जुड़ते हैं और खुद के अवलोकनों द्वारा वृत्त व उससे जुड़ी अवधारणाओं जैसे- व्यास, त्रिज्या, परिधि आदि को समझने की कोशिश करते हैं।

इससे साफ होता है कि पुस्तक स्वयं करके सीखने के नजरिए को ध्यान में रखकर लिखी गई है। इसके अलावा पुस्तक एक चीज की ओर विशेष रूप से ध्यान खींचती है कि बच्चे अपनी दृष्टि से पुस्तक में वृत्त के विभिन्न रूपों से गुजरते हुए कुंडली, कुंडलिनी आदि से भी संबंध

लेखक परिचय : करीब 15 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत, उत्तरप्रदेश के स्वयंसेवी संगठन 'नालन्दा' में कार्य करते हुए 'प्रारम्भ' शैक्षिक पत्रिका का संपादन। बच्चों के बाल साहित्य में गहरी दिलचस्पी, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। संप्रति : अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, दहरादून, उत्तराखंड में कार्यरत।

सम्पर्क : अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, 64, मयूर विहार, सहस्रधारा रोड, देहरादून-248001 उत्तराखंड

जोड़ने की कोशिश करते हैं। इससे यह एहसास होता है कि बच्चों को सोचने के लिए उकसाया जाए तो वे चीजों को स्वतः ही स्वयं से जोड़ लेते हैं।

पुस्तक में जबरदस्ती परिभाषाओं तथा तथ्यों को याद करके सिखाने का प्रयास नहीं किया गया है। आम विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में निहित गणित सीखने की बोझिल प्रक्रिया में तब्दील होती गणितीय अवधारणाओं को रटने की कवायद से यह किताब बहुत दूर है। इस पुस्तक में आए पारिभाषिक शब्दों के अर्थ पुस्तक के अंत में स्पष्ट किए गए हैं, जिससे बच्चे वृत्त से संबंधित इन नए शब्दों जैसे- चाप, जीवा, अर्धवृत्त आदि के अर्थ को खुद ही आसानी से समझ सकते हैं।

कुल मिलाकर इस पुस्तक में सीखने-सिखाने की एक प्रगतिशील दृष्टि है। जिस पर वर्तमान समय में काफी जोर दिया जा रहा है। किताब इस तथ्य को खूबसूरती से उभारती है, जिसमें बच्चे 'चूहा भाग बिल्ली आई' व 'कोड़ा है जमाल शाही' खेलते हुए, फिरकी व चकई बनाते हुए और अपना जन्म-दिन मनाते हुए वृत्त के बारे में सीखते हैं।

किताब की एक खास बात यह भी है कि इसकी मुख्य पात्र सुगंधा नाम की एक बच्ची है और उसे गणित सीखने के लिए उत्सुक दिखाया है। इस प्रकार किताब इस मिथक को तोड़ती है कि लड़कियां गणित में कमजोर होती हैं। उन्हें गणित नहीं आता है। इसके अलावा अन्य लड़कियों के नाम सुहानी, पाहुनी आदि भी गणित सीखने के लिए तत्पर दिखाए गए हैं।

किताब में वृत्तों से बने विभिन्न प्रकार के डिजाइन भी दिए गए हैं। बच्चे इनमें रंग भरने का मजा भी ले सकते हैं। इस तरह के अनुभव हमारे बचपन की प्राथमिक कक्षाओं के ड्राइंग बनाने के अनुभवों को ताजा करते हैं।

इसके साथ ही पुस्तक की शुरुआत में जब सुगंधा व सरस एक खूंटे को गाड़कर एक गोल क्यारी में मटर के दाने बोकर वृत्त बनाने का प्रयास करते हैं, तो कहीं ऐसा लगता है कि वे वृत्त के बारे में सीखने के बीज बो रहे हैं और किताब के अंतिम पृष्ठ पर आते-आते गोलाकार क्यारी में मटर के पौधों के रूप में उगे हुए वृत्त को देखकर उन दोनों के चेहरे खिल उठते हैं। तब हमें ऐसा लगता है कि यह शायद उनके खेल-खेल में वृत्त के विभिन्न पहलुओं को सीखने की खुशी है, जिसको महसूस करके वे झूम रहे हैं!

पुस्तक में दिए गए चित्रों में बच्चों के चित्र आकार में थोड़े छोटे लगते हैं जबकि उन्हें थोड़ा बड़ा होना चाहिए था। कम से कम कक्षा चार के बच्चों के आकार का। इस प्रकार चित्रों के कंपोजीशन में कमी लगती है। चित्र बहुत-सी जगहों पर स्थिर हो जाते हैं और बच्चों के लिए अपना आकर्षण खो देते हैं। पुस्तक का चित्रांकन अरविन्दर चावला ने किया है।

इस प्रकार यह पुस्तक प्राथमिक कक्षाओं में एक संदर्भ पुस्तक के रूप में उपयोग की जा सकती है। जिसका शिक्षक बच्चों के साथ अच्छा इस्तेमाल कर सकते हैं। जूनियर कक्षाओं के बच्चे भी इसे पढ़कर वृत्त से संबंधित अपने अनुभव बढ़ा सकते हैं।

पुस्तक के रचनाकार रावेन्द्र कुमार 'रवि' हैं, जो कि गणित व विज्ञान के शिक्षक हैं। यह सुखद अनुभव है कि एक शिक्षक ने बच्चों की समस्या से जूझते हुए पुस्तक की रचना की है। अन्यथा हमारी वृहत्तर शिक्षा व्यवस्था में धरातल पर काम कर रहे शिक्षक अधिकतर गुमनामी में ही रहते हैं। उनके अनुभव से जनित ज्ञान सामने आ ही नहीं पाता। इसलिए राघवेन्द्र कुमार 'रवि' साधुवाद के पात्र हैं। संभवतः यह पुस्तक अन्य शिक्षकों को भी प्रेरित करेगी कि वे बच्चों के लिए रचनाकर्म से जुड़ें। इस पुस्तक में उन्होंने अपने गणित पढ़ाने के अनुभवों को खूबसूरती से पिरोया है। वे लगभग बीस वर्षों से बच्चों के लिए एक मौलिक दृष्टि के तहत विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं लिखते रहे हैं। उनकी दो चित्रकथाएं- 'चकमा' व 'नन्हे चूजे की दोस्त' पूर्व में प्रकाशित हुई हैं। यह उनकी तीसरी प्रकाशित पुस्तक है, जो नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया जैसे बड़े प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। भविष्य में भी उनसे ऐसी ही अच्छी पुस्तकों की उम्मीद है।

इसका मूल्य साठ रुपये है जो किताब में लगे अच्छे कागज और उसके बड़े आकार को देखते हुए उचित ही लगता है।

अंत में हमें यह किताब पढ़ते हुए बच्चों के साथ कक्षाओं कराई गई एक गतिविधि याद आती है - ''क्या है लंबा, क्या है गोल। बोल भई बोल, जल्दी बोल ... ... !'' ◆

पुस्तक	: वृत्तों की दुनिया
लेखक	: रावेन्द्र कुमार 'रवि'
चित्रकार	: अरविन्दर चावला
प्रकाशक	: नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, वसंत कुंज, फेज-नई दिल्ली-110070
मूल्य	: साठ रुपये
प्रकाशन वर्ष	: 2008